॥ ओ३म् ॥

सन्ध्या तथा हवन के सम्बन्ध
में
सार्वदेशिक सभान्तगत धर्मार्य सभा की

आवश्यक घोषणायें

सन्ध्या और हवन मन्त्रों सहित

प्रकाशक—
सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा, देहली

२००३ विक्रमी

मूल्य -)

पंच महायज्ञ विधि (१) पंच महायज्ञ विधि जो पंचयज्ञ के सम्बन्ध में मुख्य पुस्तक है और एक मात्र इसी उद्देश्य से निर्मित हुआ है सन्ध्या विधान इस प्रकार पाया जाता है:—

पहली विधि—मार्जन।

दूसरी विधि—तीन प्राणायाम।

तीसरी विधि—गायत्री मन्त्र पाठ करते हुए शिखा का बांधना।

चौथी विधि—शन्नोदेवी..........मन्त्र पाठ करके तीन आचमन करना।

पांचवीं विधि—ओं वाक् वाक् पाठ करते हुए इन्द्रिय स्पर्श।

छठी विधि—ओं भूः पुनातु शिरसि .... पाठ करते हुए मार्जन करना।

सातवीं विधि—ओं भूः ....द्वारा तीन प्राणायाम।

आठवीं विधि—(१)ओं ऋतञ्च....(२)ओं समुद्रा दर्णवा दधि.... (३) ओं सूर्या चन्द्रमसौ धाता....इन तीनों मन्त्रों द्वारा अघमर्षण।

नवीं विधि—आचमन।

दसवीं विधि—गायत्र्यादि मन्त्रार्थों का मन से विचार और प्रार्थना

ग्यारहवीं विधि—(१) ओं प्राची दिगग्नि— (२) ओं दक्षिणा दिगन्द्रो (३) ओं प्रतीची दिग्वरुणो....(४) ओं उदीचीदिक् सोमो.... (५) ध्रुवा दिग् विष्णु.... (६) ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पति ....इन छः मन्त्रों द्वारा मनसा परिक्रमा।

बारहवीं विधि—(१)ओं उद्वयं ····(२) ओं उदुत्यंजात वेदसम्····
(३) ओं चित्रं देवानां····(४)ओं तच्चक्षुर्देवहितं····
इन चार मन्त्रों द्वारा उपस्थान।

तेरहवीं विधि—गायत्री मन्त्र।

चौदहवीं विधि—हे ईश्वर दयानिधे····इत्यादि वाक्य से समर्पण।

पन्द्रहवीं विधि—नमः शम्भवायच····मन्त्र द्वारा नमस्कार।

संस्कार विधि—संस्कार विधि के गृहस्थ प्रकरण में संध्या का उल्लेख होते हुए उपर्युक्त विधान से निम्न बातों का उल्लेख हुआ है:

(१) सब से प्रथम ओं अमृतोपस्तरणमसि इत्यादि····आश्वलायन गृह्य सूत्र के ३ मन्त्रों द्वारा एक और आचमन करने का विधान है।

(२) उपस्थान के मन्त्रों में इस प्रकार का भेद है:—

(क) ओं जात वेद से सुनवाम ····मन्त्र बढ़ा दिया गया है।

(क) ओं चित्रं देवानां····मन्त्र उपस्थान के मन्त्रो में तीसरा होने की जगह पहला कर दिया गया है।

सत्यार्थ प्रकाश-सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास में हवन से पहिले संध्या का विधान बतलाते हुए अघमर्षण क्रिया को सब से अन्त में करने का उल्लेख किया गया है।

इस सभा की सम्मति में संध्या का मुख्य ग्रन्थ 'पञ्च महायज्ञविधि' है। संस्कार-विधि और सत्यार्थप्रकाश में संध्या का उल्लेख प्रासङ्गिक है। इसलिए यह सभा घोषणा करती है कि ब्रह्मयज्ञ (संध्या) उसी विधि उसी क्रम और उतने ही मन्त्रों से

की जाया करे जिनको 'पञ्च महायज्ञविधि' में लिखा गया है जैसा कि स्वयं ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'पञ्चमहायज्ञ' विषय में लिखा है—

'संध्योपासन विधिश्चपञ्चमहायज्ञ विधाने यादृश उक्तस्तादृशः-कर्त्तव्यः। तथाग्निहोत्रविधिश्च यादृशस्तत्रोक्त स्तादृश एव कर्त्तव्यः-(पृष्ट ५६७ दयानन्द ग्रन्थमाला शताब्दी संस्करण)।

इसी प्रकार ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'पञ्चमहायज्ञ' विषय भाषानुवाद में तथा संस्कार विधि के गृहस्थाश्रम प्रकरण के संध्या विषय में भी 'पञ्चमहायज्ञ विधि' के अनुकूल ही संध्यादि करने का आदेश किया है।

हवन

दैनिक कृत्यों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द के लेखानुसार दैनिक हवन निम्न प्रकार होना चाहियेः—

(१) अग्न्याधान (बिना मन्त्र के)

(२) प्रातःकाल या सायंकाल के मन्त्र। यदि दोनों समयों का एक समय करना हो तो दोनो समय के मन्त्र।

(३) ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा, इत्यादि ४ मन्त्र।

(४ ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतम्।

(५) पूर्णाहुति।

नोट—सं० (१) १६ की संख्या पूरी करने के लिये गायत्री मन्त्र के अन्त में स्वाहा शब्द जोड़ कर आहुति देनी चाहिए।

नोट—सं० (२) चरु की आहुति घृत के साथ प्रारम्भ से ही देनी चाहिये।

सन्ध्या

मुख्य सन्ध्या के प्रारम्भ करने से पहिले ३ प्राणायाम करने चाहियें और गायत्री मन्त्र का पाठ करते हुए चोटी में गांठ दे लेनी चाहिये। पहली क्रिया से चित्त की स्थिति सन्ध्या करने के अनुकूल होती है और दूसरी क्रिया, बिखरे हुए बाल सन्ध्या में बाधक न हों, इसलिये की जाती है।

(आचमन मन्त्र)

(इस मन्त्र को पढ़कर तीन बार आचमन करना चाहिये)

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

(यजुर्वेद अध्याय ३६ मन्त्र १२)

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

(इस मन्त्र से इन्द्रिय-स्पर्श करना चाहिये)

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे॥

मार्जन मन्त्र

(इस मन्त्र से प्रत्येक इन्द्रिय पर जलसिञ्चन करना चाहिये)

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु नाभ्याम् ॥ ओं तपः पुनातु पादयोः । ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

(प्राणायाम मन्त्र)

(इस मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करना चाहिये)

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः , ओं सत्यम् ,

(अघमर्षण मन्त्राः)

(इन मन्त्रों का अर्थ के साथ चिन्तन करते हुए ईश्वर की महत्ता का अनुभव करो कि किस प्रकार उसने इस महज्जगत् को रचा, जिससे हृदय में उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास हो- इसी उत्पन्न श्रद्धा से मनुष्य पाप करने से बच जाया करता है)

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत ।
ततोरात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥

(ऋग्वेद १०।१६०।१) ओम् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत , अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी ॥ २ ॥

(ऋग्वेद १०।१६०।२) ओम् सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व- मकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्ष मथोस्वः ॥

ऋग्वेद (१०।१६०।३)

(इस मंत्र के बाद पुनः शन्नो देवी मंत्र पढ़कर तीन बार आचमन करना चाहिए इसके पश्चात् गायत्री इत्यादि मन्त्रार्थों का मन से विचार व प्रार्थना करनी चाहिए।

(मनसा परिक्रमा)

ओम् प्राचीदिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

(अथर्व० ३।२७।१)॥ १॥

ओं दक्षिणादिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

(अथर्व०।३।२७।२)॥ २॥

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

(अथर्व० ३।२७।३)॥ ३॥

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥

(अथर्व०।३।२७।४)॥ ४॥

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु, योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥
(अथर्व० । ३ । २७ । ५) ॥ ५ ॥

ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रोरक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु, योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥
(अथर्व० ३ । २७ । ६) ॥ ६ ॥

(उपस्थान मन्त्र)

ओं उद्वयं तमसस्पार स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यम गन्म ज्योतिरुत्तमम्

यजु० ३५ । १४ । १ ॥

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्॥

(यजु० ३३ । ३१) ॥२॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षय ँ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा। यजु० ७ । ४२ ॥ ३ ॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम: शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात॥

गायत्री मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। यजु० ३३।३।५

समर्पण मन्त्र

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

नमस्कार मन्त्र

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
यजु० १६।४१॥ ६॥

दैनिक हवन

प्रातःकाल की आहुति

(बिना मन्त्र पढ़े अग्नि प्रज्वलित करनी चाहिए)

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥ १॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ २॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ ४॥

सांयकाल की अहुति

ओं अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ १॥
ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ २॥
ओं अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ ३॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा " ४ ,,

सांय और प्रातः दोनों समय की आहुतियां

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये, प्राणाय-इदन्नमम ॥१॥

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवे ऽपानाय-इदन्न मम ॥ २ ॥

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय, व्यानाय इदन्न मम ॥ ३ ॥

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः-इदन्न मम ॥४॥

ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥ ५ ॥

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥ इससे शेष घी और सामग्री ३ बार में छोड़ देवे।

प्रथम संस्करण	२०००	सम्बत् २००२
द्वितीय ,,	५०००	,, २००३